उत्तराखंड/उत्तर प्रदेश का प्रथम द्विभाषीय (हिन्दी-अंग्रेजी) सांध्य दैनिक समाचार पत्र

जनमत टुडे

वर्ष:13 | अंक:213 | देहरादून, गुरुवार, 15 सितंबर, 2022 | पृष्ठ:08

सितंबर में करें बाजरा फसल का प्रबंधन

दीपक गौड़ (जनमत टुडे)

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉक्टर भानु प्रताप सिंह ने कृषकों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि अधिक बाजरे का उत्पादन और लाभ हेतु उन्नत तकनीक अपनाना आवश्यक है।

डॉक्टर सिंह ने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है जिसमें 87% क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में है उन्होंने बताया कि देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य फसल है और साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी बाजरे की खेती की जाती है डॉ भानु प्रताप सिंह ने बताया कि पोषण की दृष्टि से इस के दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन 10.8 से 14.5% और वसा 0.4 से 8 : मिलती है। वही कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटीन, राइबोपलेविन, विटामिन ठ2 और नाइसीन, विटामिन बी6 भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है।

गेहूं एवं चावल की अपेक्षा इस में लौह तत्व भी अधिक होते हैं उन्होंने बताया कि अधिक ऊर्जा मान के कारण इसे सर्दियों में खाना अधिक पसंद किया जाता है। उन्होंने बताया कि भारत में कुल बाजरे का क्षेत्रफल लगभग 95% असिंचित है उन्होंने कृषकों को सलाह दी है कि वर्षा न होने के कारण भूमि में नमी बनाए रखें।

डॉ सिंह ने कहा कि सितंबर माह में बाजरे की फसल में लगभग बालियां निकलने लगती हैं जिसमें रोगों का प्रकोप अधिक होता है इनका समय से प्रबंधन करना उचित रहता है उन्होंने बताया कि मृदुरोमिल आशिता रोग बालियों पर दानों के स्थान पर छोटी–छोटी हरी पत्तियां उग जाती हैं इसकी रोकथाम हेतु 0.35% कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का पर्णीय छिड़काव कर दें। दूसरे रोग के लिए बताया कि अरगट रोग लगता है जो बालियों में शहद जैसा चिपचिपी बूंदे दिखाई देती हैं इसके नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में बावस्टीन 0.1% का दो तीन बार पर्णीय छिड़काव कर दें।

दैनिक जागरण 16/09/2022

बाजरे के ज्यादा उत्पादन करने की विधि बताई

कानपुर: चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के विज्ञानी डा. भानु प्रताप सिंह ने बाजरे का ज्यादा उत्पादन करने की विधि बताते हुए किसानों के लिए सलाह जारी की है। डा. सिंह ने बताया कि देश में लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती होती है। उन्होंने बताया कि बाजरे की अच्छी पैदावार के लिए किसान भूमि में नमी बनाए रखें।

सितंबर में बाजरे की फसल में बालियां निकलने लगती हैं। इससे मृदुरोमिल आशिता रोग व अरगट रोग का प्रकोप अधिक होता है। आशिता की रोकथाम के लिए 0.35 प्रतिशत कापर आक्सीक्लोराइड का पर्णीय छिड़काव करें और अरगट की रोकथाम के लिए बावस्टीन 0.1 प्रतिशत का छिड़काव करें। वि.

हिन्दी दैनिक

रहस्य संदेश

RNI.NO.UPHIN2007/20715

3 एटा से प्रकाशित शुक्रवार 16 सितंबर 2022 पृष्ठ : 8 मूल्य : 50 पैसा मात्र

सितंबर में करें बाजरा फसल का प्रबंधन,लें अधिक उत्पादन

(अनवर अशरफ)

कानपुर (रहस्य संदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉक्टर भानु प्रताप सिंह ने कृषकों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि अधिक बाजरे का उत्पादन और लाभ हेतु उन्नत तकनीक अपनाना आवश्यक है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है। जिसमें 87ब्र क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में है। उन्होंने बताया कि देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य फसल है और साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी बाजरे की खेती की जाती है डॉ भानु प्रताप सिंह ने बताया कि पोषण की दृष्टि से इस के दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन 10.8 से

14.5ब्र और वसा 0.4 से 8 ब्र मिलती है। वही कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटीन, राइबोफ्लेविन, विटामिन ब्र2 और नाइसीन, विटामिन बी6 भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गेहूं एवं चावल की अपेक्षा इस में लौह तत्व भी अधिक होते हैं उन्होंने बताया कि अधिक ऊर्जा मान के कारण इसे सर्दियों में खाना अधिक पसंद किया जाता है। उन्होंने बताया कि भारत में कुल बाजरे का क्षेत्रफल लगभग 95ब्र असिंचित है उन्होंने कृषकों को सलाह दी है कि वर्षा न होने के कारण भूमि में नमी बनाए रखें। डॉ सिंह ने कहा कि सितंबर माह में बाजरे की फसल में लगभग बालियां निकलने लगती हैं जिसमें रोगों का प्रकोप अधिक होता है इनका समय से प्रबंधन करना उचित रहता है उन्होंने बताया कि मृदुरोमिल आशिता रोग बालियों पर दानों के स्थान पर छोटी-छोटी हरी पत्तियां उग जाती हैं। इसकी रोकथाम हेतु 0.35ब्र कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का पर्णीय छिड़काव कर दें। दूसरे रोग के लिए बताया कि अरगट रोग लगता है जो बालियों में शहद जैसा चिपचिपी बूंदे दिखाई देती हैं इसके नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में बावस्टीन 0.1ब्र का दो तीन बार पर्णीय छिड़काव कर दें।

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews | janexpresslive | janexpresslive | www.janexpresslive.com/epaper

लखनऊ
वर्ष: 13 | अंक: 330
मूल्य: ₹ 3.00/-
पेज : 12
शुक्रवार | 16 सितंबर, 2022

किसानों को प्राकृतिक विधि से सब्जी उगाने के बारे में किया जागरूक

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर कानपुर द्वारा गुरुवार को ग्राम फरीदपुर निटर्रा बलॉक संदलपुर जनपद कानपुर देहात में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना अंतर्गत प्राकृतिक विधि से सबजी फसल उत्पादन विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें मृदा वैज्ञानिक डॉ. खलील खान ने बताया कि सबजी उत्पादन के लिए मृदा का पीएच मान 6.5 से 7.5 उत्तम रहता है तथा मृदा में जीवांश कार्बन की मात्रा 0.5 फीसदी से अधिक होनी चाहिए। उन्होंने किसानों को सबजी की फसलों में रासायनिक कीटनाशकों एवं उर्वरकों का कम से कम प्रयोग करने की सलाह दी। प्रसार वैज्ञानिक डॉ.सुशील कुमार यादव ने कहा कि सबिजयों के परिरक्षण तथा मूल्य संवर्धन कर अधिक लाभ अर्जित किया जा सकता है। रंजन बाबू, राम शंकर, कालिका प्रसाद, पुजारी प्रसाद, कुलदीप सिंह सहित 40 से अधिक किसान मौजूद रहे।

सितंबर में करें बाजरा फसल का प्रबंधन

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर सिंह द्वारा जारी निर्देश के क्रम में आज विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डॉक्टर भानु प्रताप सिंह ने कृषकों को एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि अधिक बाजरे का उत्पादन और लाभ हेतु उन्नत तकनीक अपनाना आवश्यक है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि भारत विश्व का अग्रणी बाजरा उत्पादक देश है यहां लगभग 85 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में बाजरे की खेती की जाती है। जिसमें 87 प्रतिशत क्षेत्र राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश में है। उन्होंने बताया कि देश के शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में यह प्रमुख खाद्य फसल है और साथ ही पशुओं के पौष्टिक चारा उत्पादन के लिए भी बाजरे की खेती की जाती है डॉ भानु प्रताप सिंह ने बताया कि पोषण की दृष्टि से इस के दाने में अपेक्षाकृत अधिक प्रोटीन 10.8 से 14.5 प्रतिशत और वसा 0.4 से 8 ब्र मिलती है। वही कार्बोहाइड्रेट, खनिज तत्व, कैल्शियम, कैरोटीन, राइबोफ्लेविन, विटामिन बी2 और नाइसीन, विटामिन बी6 भी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। गेहूं एवं चावल की अपेक्षा इस में लौह तत्व भी अधिक होते हैं उन्होंने बताया कि अधिक ऊर्जा मान के कारण इसे सर्दियों में खाना अधिक पसंद किया जाता है। उन्होंने बताया कि भारत में कुल बाजरे का क्षेत्रफल लगभग 95 प्रतिशत असिंचित है उन्होंने कृषकों को सलाह दी है कि वर्षा न होने के कारण भूमि में नमी बनाए रखें। डॉ सिंह ने कहा कि सितंबर माह में बाजरे की फसल में लगभग बालियां निकलने लगती हैं जिसमें रोगों का प्रकोप अधिक होता है इनका समय से प्रबंधन करना उचित रहता है उन्होंने बताया कि मृदुरोमिल आशिता रोग बालियों पर दानों के स्थान पर छोटी-छोटी हरी पत्तियां उग जाती हैं। इसकी रोकथाम हेतु 0.35 प्रतिशत कॉपर ऑक्सिक्लोराइड का पर्णीय छिड़काव कर दें। दूसरे रोग के लिए बताया कि अरगट रोग लगता है जो बालियों में शहद जैसा चिपचिपी बूंदे दिखाई देती हैं इसके नियंत्रण के लिए खड़ी फसल में बावस्टीन 0.1 प्रतिशत का दो तीन बार पर्णीय छिड़काव कर दें।

हिंदुस्तान 16/09/2022

डॉ. पीके उपाध्याय निदेशक प्रशासन बने

कानपुर। सीएसए विवि के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने गुरुवार को प्रशासनिक व एकेडमिक बदलाव किए। गृहविज्ञान के अधिष्ठाता डॉ. पीके उपाध्याय को निदेशक प्रशासन एवं मॉनीटरिंग की जिम्मेदारी दी गई है। अभी तक यह जिम्मेदारी रजिस्ट्रार डॉ. सीएल मौर्य के पास थी। डॉ. मुक्ता गर्ग को अधिष्ठाता गृह विज्ञान बनाया गया है। दोनों ही ने अपना पदभार ग्रहण कर लिया।

हिन्दी दैनिक

रहस्य संदेश

RNI.NO.UPHIN2007/20715

3 एटा से प्रकाशित शुक्रवार 16 सितंबर 2022 पृष्ठ : 8 मूल्य : 50 पैसा मात्र

कृषि वैज्ञानिकों की टीम पहुंची संदलपुर ब्लॉक के गांव, किसानों को दी सब्जी उत्पादन की नवीनतम तकनीक

(रहस्य संदेश)

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर कानपुर द्वारा आज ग्राम फरीदपुर निटर्रा ब्लॉक संदलपुर जनपद कानपुर देहात में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना अंतर्गत प्राकृतिक विधि से सब्जी फसल उत्पादन विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रगतिशील किसान बाबूलाल निषाद के प्रक्षेत्र पर संपन्न हुई। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने बताया की सब्जी उत्पादन के लिए मृदा का पीएच मान 6.5 से 7.5 उत्तम रहता है तथा मृदा में जीवांश कार्बन की मात्रा 0.5 ब से अधिक होनी चाहिए। उन्होंने किसानों को सलाह दी की सब्जी फसलों में

रासायनिक कीटनाशकों एवं उर्वरकों का कम से कम प्रयोग करें।जिससे मानव शरीर पर हानिकारक प्रभाव न हो।इस अवसर पर उन्होंने उपस्थित महिलाओं से कहा कि किचन गार्डन बनाकर वैज्ञानिक तरीके से सब्जियों की फसलें उगाई जा सकती हैं। उन्होंने कहा कि महिलाएं घर का कामकाज करने के साथ-साथ अपने घर की छतों पर मिर्च,टमाटर,बैंगन आदि की खेती कर सकती हैं। तथा सब्जी उत्पादन का कार्य सफलतापूर्वक किया जा सकता है। प्रसार वैज्ञानिक डॉ सुशील कुमार यादव ने ने कहा कि सब्जियों के परिरक्षण तथा मूल्य संवर्धन कर अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक तरीके से सब्जी उत्पादन कर निश्चित तौर पर वे समृद्धि हो सकते हैं उन्होंने कहा कि इसके लिए कृषि विज्ञान केंद्र दिलीपनगर लगातार किसानों को प्रशिक्षित कर रहा है। उन्होंने किसानों को प्लास्टिक मल्चिंग, पॉलीटनल विधि से सब्जी पौध तैयार करने की विधि भी बताई और कहा कि निश्चित तौर पर उनकी आमदनी दोगुनी हो सकती है।उन्होंने टमाटर,मिर्च, बैंगन, प्याज आदि वैज्ञानिक पद्धति के बारे में विस्तार से जानकारी दी।उन्होंने किसानों से कहा कि अगर सामूहिक रूप से सब्जी की फसल उत्पादित की जाए तो निश्चित तौर पर उनकी आय में वृद्धि होगी। और उनके फसलों का नुकसान भी कम होगा। कार्यक्रम में किसानों का पंजीकरण शरद सिंह ने किय। इस अवसर पर डॉक्टर सुशील कुमार यादव ने कार्यक्रम की विस्तार से रूपरेखा रखी। इस अवसर पर रंजन बाबू, राम शंकर, कालिका प्रसाद,पुजारी प्रसाद, कुलदीप सिंह सहित 40 से अधिक किसानों उपस्थित रहे

अमर उजाला 16/09/2022

सीएसए में हुए प्रशासनिक बदलाव

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डीआर सिंह ने गुरुवार को प्रशासनिक व एकेडमिक बदलाव किए। गृहविज्ञान के अधिष्ठाता डॉ. पीके उपाध्याय को निदेशक प्रशासन एवं मॉनीटरिंग की जिम्मेदारी दी गई है। अभी तक यह जिम्मेदारी रजिस्ट्रार डॉ. सीएल मौर्य के पास थी। डॉ. मुक्ता गर्ग को अधिष्ठाता गृह विज्ञान बनाया गया है। दोनों ने गुरुवार को पद ग्रहण कर लिया। (ब्यूरो)

देश-विदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश
अपने जन्मदिन पर 'राष्ट्रीय रसद नीति' शुरू... 12
मुख्तार अंसारी की मऊ कोर्ट में पेशी... 10

जन एक्सप्रेस
लखनऊ
वर्ष: 13 | अंक: 330
मूल्य: ₹ 3.00/-
पेज : 12
@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper
गुरुवार | 16 सितंबर, 2022

डॉ. पी.के. उपाध्याय और डॉ.मुक्ता गर्ग को मिली नई जिम्मेदारी

जन एक्सप्रेस। कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में गृह विज्ञान महाविद्यालय एवं प्रशासनिक कार्यों में अधिक गतिशीलता लाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह ने डॉ. पी. के. उपाध्याय को निदेशक प्रशासन एवं मॉनिटरिंग तथा डॉ.मुक्ता गर्ग को अधिष्ठाता गृह विज्ञान नियुक्त किया है। इन दोनों अधिकारियों द्वारा गुरुवार को अपना पदभार ग्रहण किया गया।